# विविध भारती : देश की सुरीली धड़कन

अक्षरपर्व की रचना वार्षिकी इस बार देश की सुरीली धड़कन यानी विविध भारती पर आधारित है। अपनी अनूठी संगीतमय प्रस्तुति से देश-विदेश के भारतीयों में लोकप्रिय विविध भारती ने 61 बरस पूरे कर लिए हैं। तीन अक्टूबर 1957 को, जब विविध-भारती का आगाज शील कुमार शर्मा की आवाज में हुआ था, तब उन्होंने कहा था, यह विविध-भारती है, आकाशवाणी का पंचरंगी कार्यक्रम' पंचरंगी यानी पांच ललित कलाओं- गीत, संगीत, नृत्य, नाट्य और चित्र का समावेश। इसके बाद विविध भारती ने लोकप्रियता के वे शिखर छुए, जो उस वक्त सोचना नामुमकिन था। किसी भी रेडियो चैनल का सफलतापूर्वक साठ बरस से ज्यादा का सफर तय करना ही इस बात का परिचायक है कि वह आम जनजीवन में कितना रचा-बसा था। देश में प्रसारण इतिहास में विविध भारती का उदय एक अहम घटना थी। इसमें सभी के अपने-अपने अनुभव हैं। विविध भारती ने आधी सदी से ज्यादा की अपनी सक्रियता के दौरान अपनी खास संस्कृति रची है, अपना मुहावरा गढ़ा है और बदलते वक्त, श्रोताओं और जरूरतों के मुताबिक खुद को ढाला है। यही कारण है कि वह आज भी उतने ही चाव से सुना जाता है।

आज के जमाने में हर मोबाइल पर एफएम के ढेरों चैनल उपलब्ध हैं और इंटरनेट के कारण अपने मनपसंद गानों को कभी भी सुनने की सुविधा है, ऐसे में नयी पीढ़ी के लिए यह समझना कठिन है कि आखिर किसी गीत, किसी गायक, किसी संगीतकार या किसी प्रस्तोता के लिए इतनी दीवानगी आखिर कैसे हो सकती है? लेकिन जो विविध भारती के पारंपरिक, निष्ठावान श्रोता रहे हैं, उनके अनुभव सुनें तो उस दीवानगी को समझना थोड़ा संभव होता है। तब अपने मनपसंद गाने या गायक को सुनने के लिए विविध भारती बड़ा सहारा हुआ करती थी। क्योंकि उस पर हर वर्ग और हर तबके की पसंद बजती थी। रिकार्ड या कैसेट खरीदना तब एक महंगा शौक हुआ करता था, जिसे पूरा करना सबके बस की बात नहीं होती थी। और पुराने गीतों का क्या जादू था, या अब भी है, इसे इस बात से समझा जा सकता है कि, आज कई फिल्मों में पुराने गीतों को नए कलेवर में परोसा जा रहा है। फिल्म बद्रीनाथ की दुल्हनिया में तो न केवल तम्मा-तम्मा लोगे, गीत का रीमिक्स दिखाया गया, बल्कि उसमें अमीन सयानी की - भाइयों और बहनो, ये है इस साल का लोक प्रिय गीत, वाली लाइन भी ली गई। गीत-संगीत की पुरानी गलियों में यूं बार-बार लौटना यही बताता है कि उनकी अहमियत आज भी बनी हुई है। कहने की आवश्यकता नहीं कि इस महत्ता को बनाने में विविध भारती का बड़ा योगदान रहा है। इसके विविध रंगी कार्यकमों में नई-नई बातों, और लोगों से परिचय के साथ-साथ गीतों का ऐसा अनूठा खजाना भरा होता था, जो हर कोई मनभर ले लेना चाहता था। खुशी की बात यह है कि विविध भारती ने सबकी फरमाइशें पूरी कीं, किसी को निराश नहीं किया।

अक्षरपर्व के इस विशेषांक के लिए हमारे अनुरोध पर विविध भारती और आकाशवाणी से जुड़े कई रचनाकारों ने अपने आलेख, अनुभव, संस्मरण हमें भेजे, साथ ही अन्य लेखकों ने भी अपना रचनात्मक योगदान दिया, हम उन सभी के आभारी हैं। पाठक इस अंक को पढ़ें और अपनी प्रतिक्रियाओं से अवगत कराएं। आपके सुझावों की प्रतीक्षा रहेगी। **संपादक**